

निराशा नहीं, एक अवसर है असफलता

- ब.कु. निकुंज, घाटकोपर, मुम्बई

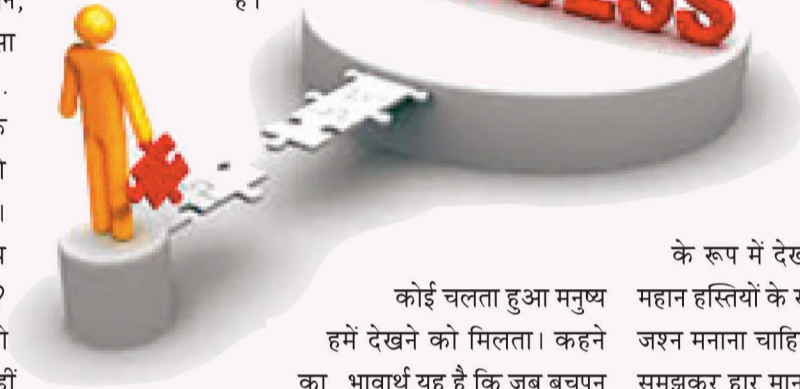
कहते हैं कि सफलता का स्वाद बड़ा मीठा होता है और असफलता का बड़ा कड़वा। इसलिए यह तो ज़ाहिर सी बात है कि अधिकतर लोगों को असफलता रास नहीं आती है। तभी तो हम सभी ज़िंदगी भर विफल होने की चिंता में खुद के मन को थोड़ा-थोड़ा मारते रहते हैं।

आज जिसे देखो, वह विविध प्रकार के काल्पनिक भय में जी रहा है। मसलन, ऐसा होगा तो, ऐसा नहीं हुआ तो.... जैसे अनेक प्रश्नों के जाल में हम खुद को उलझाते रहते हैं। पर हम खुद के साथ ऐसा क्यों करते हैं? इसका उत्तर तो किसी के पास नहीं है। क्या हममें से कोई भी कभी असफल नहीं हुआ है? संभवतः ऐसा कोई भी नहीं, जो यह दावा कर सके कि उसने कभी कोई असफलता नहीं देखी है। याद करो अपने

बचपन के दिन जब हम दोनों हाथों और घुटनों के बल मां के बुलाने पर परिश्रम करके चलने की कोशिश करते थे, तब क्या होता था? क्या पहले प्रयास में हम चलने में सफल हो जाते थे? नहीं न।

यदि बचपन की उस असफलता को गंभीरता से महसूस कर हम सभी बैठ जाते, तो

आज शायद ही



कोई चलता हुआ मनुष्य हमें देखने को मिलता। कहने का भावार्थ यह है कि जब बचपन में असफल होते-होते हम सफलता की सीढ़ी चढ़ना सीखे तो फिर वयस्क होने के बाद क्यों हम सीखना छोड़ देते हैं? क्या कारण है, जो हम असफलता से सीखकर आगे बढ़ने के बजाय निराश और उदास

होकर बैठ जाते हैं?

कहते हैं कि कमज़ोर तब रुकते हैं, जब वे थक जाते हैं और विजेता तब रुकते हैं जब वे जीत जाते हैं। इसका व्यावहारिक उदाहरण जानी-मानी हस्तियों के रूप में हमें देखने को मिलता है, जिन्होंने महान सफलता हासिल करने के लिए असफलता के हर कदम को सफलता की सीढ़ी बनाया।

महान लोगों के जीवन में पहला कदम होता है विफलता को फिर से परिभाषित करना और उच्च स्तर तक पहुंचने के लिए उसे एक अवसर के रूप में देखना। अतः हमें भी उन महान हस्तियों के समान असफलताओं का जश्न मनाना चाहिए ना कि खुद को नीचा समझकर हार मानकर बैठ जाना चाहिए।

दरअसल, हम जीवन की हर विफलता के साथ सफलता के एक कदम और करीब आ जाते हैं। याद रखें! जितनी आप मेहनत करते हैं, मुश्किलें उतनी ही आपके सामने झुकती जाती हैं।

जम्प देकर विघ्न को पार कर जाओ

प्रश्न:- हम जैसे ज़िंदगी को परीक्षा बनाकर रखते हैं। मतलब सभी को उससे गुज़रना ही पड़ेगा। ऐसा लगता है कि पता नहीं हम कौन सी, बहुत बड़ी प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं जैसे यह बाधा दौड़ हो।

उत्तर:- यह तो जैसे बाधा दौड़ की तरह लगता है। अगर हम जीवन में इस तरह की बाधा दौड़ भी करें तो जब रुकावट आती है तो हम क्या करते हैं? कूद जाते हैं। थोड़े ही उधर खड़े हो जायेंगे। ये विघ्न मेरे जीवन में आयी ही है मुझे आगे बढ़ाने के लिए। उसी तरह जीवन में जब भी कोई विघ्न आये तो उसे जम्प देकर पार कर जाओ। जीवन में विघ्न तो आने ही हैं चाहे वो परिस्थितियों के रूप में आये या कई बार लोगों के रूप में आ जाता है, तो कई बार रिश्तों के रूप में आ जाता है। जैसे ही हमारे जीवन में कोई विघ्न आये तो हमें उस समय अपने संकल्पों को चेक करना चाहिए कि वो किस प्रकार के हैं? उस समय हमारे संकल्प यही चलते हैं कि अब मेरा क्या होगा, मेरे भाग्य का क्या होगा, उनका भाग्य तो बिल्कुल ठीक है, उनके साथ तो सब अच्छा ही हो रहा है। फिर हम क्या कहते हैं कि वो तो अच्छे नहीं हैं लेकिन उनके साथ सब कुछ अच्छा ही हो रहा है। मैंने तो जीवन में सब कुछ अच्छा किया, मेरे साथ फिर भी बुरा क्यों हो रहा है? क्योंकि मेरे साथ जो हो रहा है उसको मैं कैसे देख रही हूँ मेरे साथ बहुत बुरा हो रहा है, मेरा भाग्य खराब है, तो फिर क्या होता है कि मैं रुकावट पर आकर खड़ी

हो जाती हूँ और बाधा को देखकर मैं गुस्सा करती जा रही हूँ, दर्द क्रियेट करती जा रही हूँ और जब ये दर्द ज़्यादा बढ़ जाता है तो मैं आपसे बाहर हो जाती हूँ।

प्रश्न:- फिर मुझमें कूदने की हिम्मत नहीं रह जाती है।

उत्तर:- ताकत खत्म हो गयी ना। जब कोई विघ्न आया तो उस समय हमें क्या करना चाहिए? उस समय हमें और भी ज़्यादा ताकत चाहिए। अभी तो आप एक गति से भाग रहे थे लेकिन जैसे ही कोई बाधा आयी तो उसे जम्प देने के लिए भी तो ऊर्जा चाहिए। जैसे ही मैं किसी से तुलना करती हूँ तो मेरी रही-सही ताकत भी खत्म हो जाती है और हम रुकावट के सामने आकर खड़े हो जाते हैं क्योंकि अब उसे पार करने की ताकत ही नहीं रही।

प्रश्न:- वास्तव में शुरू होते ही हर प्रतिभागी को कहा जाता है कि आप अपने रास्ते का ध्यान रखें। मुझे याद है कि कोच क्या कहते हैं, इधर-उधर कुछ नहीं देखना है आप कहां जा रहे हो उस पर ध्यान केंद्रित करना है तभी आप बाधा को पार कर सकोगे।

उत्तर:- अगर आपने सिर्फ अपनी यात्रा पर ध्यान रखा तो फिर विघ्न को पार करना बहुत आसान हो जायेगा। लेकिन हम अपने जीवन की यात्रा को प्रतियोगिता बना लेते

हैं। और हम भविष्य में 'सफलता' दूढ़ने का प्रयास करते हैं कि ये सफलता मिलेगी तो मुझे खुशी मिलेगी क्योंकि हमने जीवन को 'हार और जीत' का खेल समझ लिया है। सफलता मिलती है तो हमारी जीत होती है, नहीं मिलती है तो हार होती है। अब मुझे जो सफलता चाहिए थी, अगर वो नहीं हुई तो मैं अपने आपको असफल समझने लगता हूँ। अब जैसे ही असफलता का विचार आया तो मैं चिंटिंग करना शुरू कर देता हूँ, क्योंकि हमारा बिलीफ सिस्टम बना हुआ है जीतने और हारने का नाम ही ज़िंदगी है। अब ये सारे बिलीफ सिस्टम मुझे क्या करेंगे? हताश करेंगे।

सफलता क्या है? चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाये, मुझे उसमें सफल होना ही है, और इसे हमें स्थिर होकर करना है, जिससे हमें अच्छी फीलिंग आये तो उसे हम सफलता कहेंगे। जब हमें 'मैं कौन हूँ' यह समझ में आ जायेगा तो ये सारी चीज़ें जो हमने क्रियेट की थीं, ये हमारे लिए बाधा नहीं बनेगी। नहीं तो आज हम सफलता के नाम पर बहुत ज़्यादा दर्द से, तनाव से और गुस्से से कार्य करते हैं। इसके पीछे हमारा उद्देश्य यही होता है कि मुझे सफल होना है। इसे सफलता नहीं कहेंगे क्योंकि इसे प्राप्त करने में कितना दर्द क्रियेट किया, कितने लोगों के साथ ऊपर-नीचे हो गया और अंत में हम चाहते हैं कि हमें खुशी मिल जाये तो क्या मुझे खुशी मिलेगी!



चित्तौड़गढ़-प्रपात नगर। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए बी.जे.पी. पार्षद चन्द्र प्रकाश, बी.जे.पी. पूर्व उपजिला प्रमुख मिट्टुलाल जाट, ब.कु. आशा, ब.कु. लक्ष्मी, महेश भाई तथा अन्य।



फर्रुखाबाद-वीवीगंज(उ.प्र.)। ब.कु. मंजू को उनके उत्कृष्ट सेवाओं के लिए स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए सहकारिता कैबिनेट मंत्री शिवपाल सिंह यादव।



जयपुर-ओडिशा। सेवाकेन्द्र की रजत जयन्ती कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब.कु. गीता, माउण्ट आबू, सूर्यमणी भाई, राज भाई, ब.कु. जयन्ती तथा अन्य।



दिल्ली-सीताराम बाज़ार। शिव जयन्ती पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब.कु. विमला, सुनीता बहन, जगरूप भाई, धर्मशाला व मंदिर ट्रस्टी विनोद जी व अन्य।



सादड़ी। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में कलेक्टर रोहित गुप्ता, श्रीमती गुप्ता, उनकी बच्ची, ब.कु. ज्योति, ब.कु. सोमदादा व अन्य।



दिल्ली-चाँदनी चौक। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं निगम पार्षद सिम्मी जैन, ब.कु. विमला, ब.कु. सुनीता एवं ब.कु. रेखा तथा ग्रुप डान्स करते हुए बच्चे।